K-796

Total Pages : 3 Roll No. .....

MAJY-503

पंचांग एवं मुहूर्त्त-01

MA Jyotish (MAJY)

1st Semester, Examination 2023 (Dec.)

Time : 2 Hours] **Max. Marks : 70**

नोट : यह प्रश्नपत्र सत्तर (70) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।

(खण्ड-क)

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×19=38)

1. पञ्चाङ्ग के स्वरूप पर सुविस्तृत प्रकाश डालिए।

2. वैदिक साहित्य में पञ्चाङ्ग विषय पर विस्तृत आलेख प्रस्तुत कीजिए।

3. दृक्सिद्धपञ्चाङ्ग की आवश्यकता पर विमर्श करते हुए सूर्यसिद्धान्त की विषयवस्तु प्रस्तुत कीजिए।

4. वारगणना के सिद्धान्त की सोपपत्तिक व्याख्या कीजिए।

5. पञ्चाङ्ग निर्माण की विभिन्न पद्धतियों की समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।

(खण्ड-ख)

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×8=32)

1. पञ्चाङ्ग के महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित का परिचय दीजिए-

   (क) द्वादश राशियाँ।

   (ख) तिथियाँ।

   (ग) अश्विन्यादि नक्षत्र।

(घ) विष्कुम्भादि योग।

(ङ) चर एवं स्थिर करण।

3. तिथिमान साधन के सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

4. पञ्चाङ्ग निर्माण प्रक्रिया में दृक्तुल्यता के महत्व को रेखाङ्कित कीजिए।

5. आनन्दादि योग कितने हैं? नामोल्लेख करते हुए आनन्दादियोगसाधन की विधि को प्रस्तुत कीजिए।

6. नक्षत्रों के स्वामियों का नामोल्लेख कर ध्रुव, चर एवं मिश्रसंज्ञक नक्षत्रों को लिखिए।

7. किस करण का नाम भद्रा है? भद्राविमर्श पर टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

8. सायननिरयणपद्धतियों के गुण-दोषों पर विस्तृत टिप्पणी कीजिए।